हिन्द स्वराज : कुछ नोट्स

त्रिदिप सुहृद

त्रिदिप सुहृद महात्मा गांधी के जीवन एवं विचार के गम्भीर अध्येता हैं। वह वर्तमान में नारायण देसाई द्वारा चार खंडों (लगभग 2400 पृष्ठों) में लिखित महात्मा गांधी की जीवनी *'माई लाइफ इज माय मैसेज'* का गुजराती से अंग्रेजी में अनुवाद कर रहे हैं। त्रिदिप राजनीति टिप्पणीकार भी है और समाचारपत्रों में नियमित लेखन करते हैं। उन्होंने भारत में आत्मकथा की परम्परा, औपनिवेशिक भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन जैसे विषयों पर भी कार्य किया है। उनका गांधी जी के उपवासों से सम्बंधित शोध जारी है।

गांधी जी ने *हिन्द स्वराज* 1909 में लिखी परंतु उनकी प्रवृत्ति थी कि वे इसका उल्लेख 1908 में करते थे। सौ वर्ष पहले लिखी किताब को कैसे पढ़ा जाय? क्या इसे गांधी जी द्वारा लिखित सात पुस्तकों में से पहली पुस्तक के रूप में पढ़ा जाय?[1] एक ऐसी किताब जिसे उन्होंने खुद को समर्पित किया? या इसे साम्राज्य की आलोचना के रूप में पढ़ा जाय? या आधुनिक सभ्यता की निन्दा के बतौर? या तकनीक विरोधी पाठ के रूप में? या इसे उत्तर उपनिवेश, उत्तर आधुनिक संदर्भों के अग्रदूत के रूप में पढ़ें जिन विचारों ने अकादमिक संस्कृति पर कब्जा जमा रखा है।

2. मैं हिन्द स्वराज को एक ऐसे पाठ के रूप में पढ़ने की प्रस्तावना करता हूं जो अपने समय से गहरे तौर पर जुड़ा है। यह जुड़ाव पाठ की सार्वभौमिकता या अपने संदर्भों से परे जाने की क्षमता को अस्वीकार नहीं करता है। जब हम यह दावा करते हैं कि यह पाठ अपने समय से जुड़ा है, तब कोई भी यह नहीं कह सकता कि यह पाठ ऐतिहासिक घटनाओं की ओर ही संकेत करता है बल्कि उस दार्शनिक पृष्ठभूमि को भी बताता है जिसमें हिन्द स्वराज जैसे संवाद जन्म ले सकते हैं। हालांकि यह उस मुख्य संवाद को नजरअंदाज नहीं करता जो संवाद साम्राज्य से हिंसक प्रतिरोध के पक्षधर विचारकों के साथ हुआ और न ही उस प्रभाव की अनदेखी करता है जो रस्किन, थोरो, कारपेण्टर, अन्ना किंग्सफोर्ड और तोलस्तोय की रचनाओं को पढ़ने के बाद गांधी के जीवन और चिन्तन पर पड़े। साथ ही दक्षिण

अफ्रीका और भारत में भारतीय समुदायों के महत्वपूर्ण संघर्ष को भी अनदेखा नहीं करता है।

3. आखिर इस कृति/पाठ की जड़ें किस दार्शनिक आधारभूमि में है? इस आधारभूमि को संक्रमण काल कहा जा सकता है। मैं इसके लिए 'गोधूलि बेला' की छवि इस्तेमाल करना चाहता हूं। हिन्दी व गुजराती का 'गोधूलि' शब्द बहुत उद्बोधक है। यह ऐसा क्षण है जब गायें घरों की ओर लौटती हैं और उनके पैरों से उड़ी धूल आकाश पर छाकर नजर को धुंधला कर देती है। गोधूलि एक क्षणभंगुर अवस्था है। यह दिन और रात, सूर्य और चंद्रमा की रोशनी के बीच का समय है। यह धूल दोनों का अहसास कराती है और किसी को भी नहीं नकारती है। इन दोनों परिस्थितियों के एक साथ होने के कारण गोधूलि बहुत रोचक क्षण है।

4. हिन्द स्वराज लिखते समय ऐसे कौन से धूमिल क्षण रहे होंगे? यह एक ऐतिहासिक क्षण है जो अधिसंख्य लोगों के लिए ठोस चीज नहीं है सिवाय कुछ यादों के। इस क्षण में एक साथ दो जीवन पद्धतियां एवं विचार प्रस्तुत होते हैं। एक को हम अ-आधुनिक कह सकते हैं। अ-आधुनिक आधुनिकता विरोधी नहीं है और न ही इसमें आधुनिकता का बिल्कुल अभाव है। यह कुछ ऐसा है जो आधुनिक क्षेत्र से बाहर स्थित है। इसे आधुनिक आवश्यक एवं अपरिहार्य संदर्भों के बगैर समझा जाना चाहिए। दूसरी जीवन पद्धति वह है जिसे हम आधुनिक सभ्यता कहते हैं। मेरा अनुरोध है कि हिन्द स्वराज को एक पाठ के रूप में पढ़ना चाहिए जो इतिहास के उस मोड़ पर लिखा गया जहां एक साथ अ-आधुनिक और आधुनिक विश्व उपस्थित थे, फिर चाहे यह क्षण क्षणिक ही क्यों न हो।

5. चलिए हम इसे और अधिक गहराई से और हिन्द स्वराज के सबूतों से विश्लेषित करें। अध्याय बारह, 'सच्ची सभ्यता क्या है?' में गांधी जी एक ऐसे भारत का चित्र उपस्थित करते हैं जो आधुनिक सभ्यता एवं उसके प्रतीकों (रेल, डॉक्टर एवं वकील) से अछूत एवं बेदाग है। यही वह भारत है जिसे गांधी जी प्रायः 'प्राचीन सभ्यता' और 'सच्ची सभ्यता' के रूप में रेखांकित करते हैं। प्राचीन ग्रीक, रोम, मिश्र, चीन तथा जापान इस भारतीय सभ्यता की ओर इंगित करते हैं। आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता की पहुंच से बाहर अवस्थित भारत ही सच्चा भारत है।

6. गांधी जी के लिए आधुनिक सभ्यता चाहे कितनी भी क्षणिक, नाशवान और आत्मघाती हो, इसी ने हिन्द स्वराज को आवश्यक बनाया। वास्तव में, हिन्द स्वराज को इस आधुनिक जगत से बाहर समझा ही नहीं जा सकता है। यह आधुनिक जगत साम्राज्य, रेल, डॉक्टर और वकीलों के प्रतीकों को नहीं बल्कि उस किलडोनन कैसल को भी प्रदर्शित करता है जो गांधी जी को इंग्लैण्ड से दक्षिण ा अफ्रीका ले जा रहा था। साम्राज्य के केन्द्र से एक उपनिवेश की ओर। हिन्द स्वराज का चालीस साल का लेखक खुद भी एक आधुनिक प्रवासी गिरमिटिया है। आधुनिक सभ्यता की हकीकत ही हिन्द स्वराज के लिए आधारभूमि तैयार करती है। इस प्रकार हिन्द स्वराज को एक ऐसे संवाद के रूप में पढ़ना सम्भव है जो इस संक्रमण काल में लंगर डाले हुए हो। फिर चाहे जहां अ-आधुनिक सभ्यता अप्रभावी होने के बावजूद भी उपस्थित हो तथा दूसरी ओर आधुनिक सभ्यता हावी होने के बावजूद भी सार्वभौमिक एवं स्थायी तथ्य न हो। आधुनिक सभ्यता को क्षणिक एवं आत्महंता के रूप में देखा गया है। हिन्द स्वराज को केवल एक पाठक और सम्पादक के बीच संवाद के रूप में नहीं पढ़ा जा सकता। यह बहुसंवादों का पाठ है अ-आधुनिक और आधुनिक सभ्यता के बीच; भारत और साम्राज्य के बीच; भारत, ग्रीक, रोम तथा मिस्र की प्राचीन सभ्यताओं के बीच; पराधीन भारत और आधुनिक यूरोप के बीच; होमरूल और स्वराज प्राप्त करने वाले के बीच; उन लोगों के बीच जो साध्य साधन को अलग मानते हैं और दूसरे वह जो साध्य साधन को एक मानते हैं। हिन्द स्वराज बहुस्वर है। केवल संवाद नहीं, एकगामी संवाद तो बिल्कुल नहीं।

7. गांधी जी के लिए आधुनिक सभ्यता की विशेषता साम्राज्य, रेल की गति, पाश्चात्य कानून द्वारा लायी गयी थी। समाज की संविदा प्रवृत्ति, आधुनिक दवाइयों से नहीं प्रदर्शित होती। यह

राजनैतिक उद्देश्यों की प्राप्ति और राजनैतिक असंतोष जाहिर करने हेतु हिंसा को एक वैध तरीका मानने से भी नहीं होती। हालांकि यह आधुनिक सभ्यता का महत्वपूर्ण गुण है। आधुनिक सभ्यता का अनिवार्य चरित्र आधारभूत सम्भावना (Fundamental Possibility) का नकार है। यह नकार अपने स्व को जानने का नकार है। छठे अध्याय *'सभ्यता'* में गांधी जी आधुनिक सभ्यता का वर्णन करते हुए कहते हैं *'Its true test lies in the fact that people living in it make bodily welfare the object of life.'*[2] यह मूल गुजराती वाक्य का सही अनुवाद नहीं कहा जा सकता। इसकी बजाय यह कहना ज्यादा मुफीद है *'Its true identity is in the fact that people seek to find in engagement with the material world and bodily comfort meaning and human worth.'*[3] *(इस सभ्यता की सही पहचान तो यह है कि लोग बाहरी (दुनिया) की खोजों में और शरीर के सुख में धन्यता, सार्थकता और पुरुषार्थ मानते हैं)* शारीरिक सुख और भौतिक संसार में अर्थ और सोद्देश्यता की तलाश का आधार पुरुषार्थ बनता है तो मानव कल्याण की कसौटी बदल जाती है। यह परिवर्तन क्रांतिभूत है। यह व्यक्ति से शरीर और भौतिक संसार तक बदलता है। इसीलिए गांधी जी ने आधुनिक सभ्यता को 'अधार्मिक', 'शैतानी सभ्यता' और 'कलयुग' कहा। कसौटी का बदलना गांधी जी के लिए मूलभूत है। यह 'सच्ची सभ्यता' के आधारभूत मूल्यों को तोड़ता है। गांधी जी बताते हैं : *''सभ्यता वह आचरण है जिससे आदमी अपना फर्ज अदा करता है। फर्ज अदा करने के मानी हैं नीति का पालन करना। नीति के पालन का मतलब है अपने मन और इंद्रियों को बस में रखना। ऐसा करते हुए हम अपने को (अपनी असलियत को) पहचानते हैं। यही सभ्यता है।''*[4]

इस प्रकार सभ्यता खुद को जानने की सम्भावना पैदा करती है। ऐसी जीवनपद्धति जो व्यक्ति और समूह को अपनी असलियत नहीं पहचानने देती, उससे बचना चाहिए। मानवीय कल्याण का आधार शारीरिक सुख व भौतिक संसार बता कर आधुनिक सभ्यता आंतरिक दृष्टि को पहचानना असम्भव कर देती है क्योंकि तब तलाश का केन्द्र तो बाहरी ही होता है और हमारी दृष्टि भी बाहर ही केन्द्रित होती है। गांधी जी के लिए ऐसी सभ्यता अधार्मिक है। धर्म गांधी जी के लिए कोई पंथवाद नहीं बल्कि सभी धर्मों में विद्यमान धर्म या दूसरे शब्दों में कहना चाहिए सत्य है।

8. एक सच्ची सभ्यता अपने आपको पहचानने की सम्भावना ही पैदा नहीं करती बल्कि स्वराज को पाना भी सम्भव बनाती है। *'हम अपने ऊपर राज करें यही स्वराज्य है।'*[5] जिस स्वराज्य के बारे में गांधी कहते हैं वह स्वराज अपने आपको पहचानने पर आधारित है। जो व्यक्ति स्वयं को पहचानते हैं वे ही अपने आप पर शासन करने में समर्थ होते हैं। यह अपने प्रकार का शासन नहीं बल्कि स्वयं पर शासन है। (It is not rule of one's own kind but over oneself) गांधी जी का तर्क था कि जिन लोगों ने अपने मन और इंद्रियों पर विजय प्राप्त की है और ऐसा करते हुए अपने आपको पहचान लिया है, वे ही स्वराज के योग्य हैं। गांधी जी के अनुसार स्वराज्य होमरूल या स्वतंत्रता से अलग है। स्वराज एक अनुभव है जिसे महसूस किया जाना है। वह कहते हैं : *''इस स्वराज को आप सपने जैसा न मानें। मन से मान कर बैठे रहने का भी स्वराज्य नहीं है। यह तो ऐसा स्वराज्य है कि आपने अगर इसका स्वाद चख लिया हो, तो दूसरों को इसका स्वाद चखाने के लिए आप जिन्दगी भर कोशिश करेंगे। लेकिन मुख्य बात तो हर शख्स के स्वराज भोगने की है।''*[6]

यह स्वराज्य और होमरूल आंदोलन के बीच के महत्वपूर्ण अंतर में से एक है। होमरूल राजनीतिक दासता की अनुपस्थिति को बताता है। एक बार यह प्राप्त हो गयी तो सभी नागरिक मुक्त हैं, कम से कम एक तौर पर। स्वराज होमरूल से आगे की बात है, एक व्यक्ति दासता के अधीन होते हुए भी स्वराज को महसूस कर सकता है।[7] एक बार इसे अनुभव कर लेने के बाद व्यक्ति इस अनुभव को जिन्दा रखना चाहता है। यह कहना एक आडम्बर है कि स्वराज का अनुभव दूसरों को प्रदान किया जा सकता है। यह ऐसा है कि हर व्यक्ति को स्वयं ही महसूस करना होता है।

तद्भव

9. होमरूल एवं स्वराज के बीच केवल राजनीतिक और पद्धति प्रयोग का ही भेद नहीं है बल्कि सभ्यता का सवाल है। होमरूल समर्थकों का तर्क है कि भारत ब्रिटिशों द्वारा गोला बारूद के जरिए अधीन बनाया गया। इसलिए उनका उद्देश्य ब्रिटिशों को बाहर खदेड़ना है लेकिन उनके कानून, रेल व ज्ञान व्यवस्था को बनाये रखना है। जैसाकि गांधी जी ने कहा कि *'वे शेर तो नहीं चाहते, उसका स्वभाव जरूर चाहते हैं।'* स्वराज सभ्यता के सवाल पर जोर देता है। भारत को लिया नहीं गया है बल्कि हमने ही ब्रिटिशों की आधुनिक सभ्यता के प्रलोभन में भारत को ब्रिटिशों को सौंप दिया है। अतः जब हम अपने इस घातक प्रलोभन का इलाज कर लेंगे इससे बचेंगे, हम मुक्त हैं।

10. लेकिन स्वराज व्यक्तिगत मुक्ति नहीं है। यह सामूहिक और साभ्यतिक है। स्वराज को प्राप्त करने का साधन सत्याग्रह है। सत्याग्रह साध्य और साधन के सिद्धांत पर आधारित है। वास्तव में, हिन्द स्वराज साधन और साध्य के प्रश्न पर एक गहन चिन्तन है। गांधी जी ने इस तर्क की निन्दा की कि साध्य प्राप्ति के लिए कोई भी साधन उचित है। वह कहते हैं *"'जैसे देव वैसी पूजा' वह वाक्य बहुत सोचने लायक है।"* [8] उन्होंने साधन को बीज और साध्य को वृक्ष माना, *'जितना सम्बंध बीज और पेड़ के बीच है, उतना ही साधन और साध्य के बीच है।'*[9] गांधी जी का तर्क है कि साध्य साधन एक दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते, दोनों पवित्र होने चाहिए। शैतान को भज कर ईश्वर भजन का फल नहीं पाया जा सकता, यह गांधी जी का तर्क है। साधन साध्य का अनुल्लंघनीय सम्बंध एवं उनकी पवित्रता गांधी जी का बेहतरीन योगदान है। हिंसा की निन्दा इसलिए होनी चाहिए कि वह एक अपवित्र साधन है। डर और हिंसा के जरिए पायी जाने वाली वस्तु तभी तक रहती है जब तक डर कायम है। हिंसा का प्रयोग यह भुला देता है कि हम क्या हैं। गांधी जी कहा करते थे कि जितना ज्यादा हिंसक होते हैं उतना ज्यादा स्वयं से दूर होते जाते हैं। हिंसा हमें स्मृतिलोप की ओर ले जाती है। यह आधुनिक सभ्यता स्मृतिलोप की शिकार है और स्वराज की विरोधी है। सत्याग्रह इस स्थिति को स्वीकार करता है।

11. सत्याग्रह साधन साध्य का सिद्धांत व व्यवहार है। इनका क्रियान्वयन प्रयोगकर्ता द्वारा ही होता है। अगर कोई यह सवाल पूछे कि पवित्र साधन क्या है तो जवाब होगा कि पवित्र व्यक्ति के द्वारा जिन साधनों का प्रयोग किया जाता है, वे ही पवित्र साधन हैं। सत्याग्रह के लिए प्रयोगकर्ता का आत्मनिरीक्षण एवं आत्मशुद्धिकरण की सतत प्रक्रिया से गुजरना एवं परिमार्जित होना आवश्यक है। गांधी जी ने इस ओर संकेत करते हुए कहा कि सत्याग्रही ब्रह्मचर्य, अभय और स्वैच्छिक गरीबी को अपनायेगा।

12. वास्तव में साधन साध्य की बहस, सत्याग्रह की क्रियात्मकता तब स्पष्ट होती है जब इसे आश्रम के संदर्भ में रखा जाता है। इसे एक आश्रमवासी के जीवन के आधार पर समझा जा सकता है। स्वराज के 'स्व' को गांधी जी के अहमदाबाद एवं वर्धा के आश्रमों में देखा एवं समझा जा सकता है। हिन्द स्वराज में जो अनकहा रह गया है वह आश्रम में विचार और जीवन में उतारा गया है। गांधी जी ने स्थितप्रज्ञ एवं सत्याग्रही बनने की अपनी सतत तलाश की जिन्दगी जी। हिन्द स्वराज में उनका दावा है कि *'मेरा मन गवाही देता है कि ऐसा स्वराज पाने के लिए यह शरीर समर्पित है।'*[10] आश्रम एवं आश्रमवासियों के बिना यह दावा केवल दावा ही रह जाता। अतः हिन्द स्वराज का एक पाठ आश्रम प्रयोगों के संदर्भ में भी किया जा सकता है।

13. हिन्द स्वराज को गांधी जी की आत्मकथा के साथ पढ़ना चाहिए। आत्मकथा के जरिए हम देख सकते हैं कि खुद को पहचानने के लिए गांधी जी की कितनी उत्कृष्ट अभिलाषा एवं प्रयास थे। यह हमें बताती है कि कैसे रहना चाहिए और उद्देश्य की प्राप्ति हेतु सम्पूर्ण व्यक्तित्व कैसे समर्पित होता है। आत्मकथा न केवल स्व के प्रति गांधी जी के प्रयोगों की समझ देती है अपितु यह प्रस्तावित भी करती है कि कैसे सभ्यता एक आचार के रूप में कर्त्तव्य की शिक्षा देती है। कर्त्तव्य पूर्ति और नैतिक आचरण पूरक हैं। ऐसा करते हुए हम खुद को जानते हैं और खुद पर शासन करना सीखते हैं।

तद्भव

14. इस प्रकार हिन्द स्वराज राजनीतिक गतिविधियों हेतु आधार उपलब्ध कराता है। इसका यह अर्थ नहीं कि हिन्द स्वराज में गांधी जी के लिए राजनीति या सामाजिक कार्य दोयम रहे हों। मगर हिन्द स्वराज व्यक्तिगत आचरण एवं उत्तरदायित्व का सिद्धांत एवं व्यवहार बताता है। हमें ध्यान में रखना होगा कि स्वराज दूसरे के बदले में नहीं पाया जा सकता है। इसे प्रत्येक को अनुभव करना होता है। कोई भी अन्य समकालीन विचार निजता और राजनीति के बीच के सम्बंध पर इतना जोर नहीं देता है। ऐसा करते हुए भी यह निजता को राजनीति नहीं बनाता या व्यक्ति को समूह के अधीन नहीं करता है।

15. हिन्द स्वराज आधुनिक सभ्यता की कटु आलोचना है। गांधी जी ने इसे केवल अधार्मिक, कलयुग, शैतानी सभ्यता ही नहीं कहा बल्कि यह दावा किया कि यह सभ्यता ऐसी है कि यह खुद का विनाश करने को अभिशप्त है। गांधी जी के लिए हर वह बात जो स्व से दूर ले जाये, स्थायी नहीं है। आधुनिक सभ्यता एवं इसके प्रतीकों की आलोचना करने के बावजूद भी हिन्द स्वराज घृणा का पाठ नहीं है। वास्तव में हिन्द स्वराज्य गहन प्रेम से सम्पृक्त है और आधुनिक सभ्यता की आग में जल रहे लोगों के प्रति सहानुभूति दर्शाता है। हिन्द स्वराज मुक्ति का शास्त्र है, न केवल भारत के लिए अपितु ब्रिटेन के लिए भी। इसीलिए गांधी जी इस बात पर जोर देते हैं कि भारत का संघर्ष ब्रिटेन के साथ नहीं बल्कि उस आधुनिक सभ्यता से है जिसका वे प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। गांधी जी ब्रिटिशों को याद दिलाते हैं कि वे धार्मिक जनता हैं और जनता और एक समाज के रूप में कलंक से परे हैं। गांधी जी की सद्भावना थी कि ब्रिटेन सच्चे अर्थों में इसाई बने। अगर वे नैतिक बनते हैं और यह जानने की कोशिश करते हैं कि उनके प्रयास अधार्मिक और आत्मघाती हैं तभी ब्रिटिश भारत में रह सकेंगे। वे भारत में नैतिक बन कर रह सकते हैं मगर आधुनिक सभ्यता द्वारा निर्मित साम्राज्य व आधुनिकता के उपासक बन कर नहीं। हिन्द स्वराज समकालीन विचारों में एक ऐसा दुर्लभ दस्तावेज है जो अपने दमनकर्ता का विनाश नहीं चाहता बल्कि उनकी मुक्ति का विचार करता है। गांधी जी के अनुसार भारत का कर्त्तव्य अद्भुत है; इसे स्वराज केवल अपने लिए नहीं पाना है बल्कि ब्रिटिशों को आधुनिक सभ्यता की आग से भी मुक्त कराना है। इस प्रकार हिन्द स्वराज को प्रेम के सार्वभौमिक व्यवहार के रूप में पढ़ना चाहिए।

16. सत्याग्रह प्रेमपूर्ण व्यवहार है क्योंकि यह अन्य में विद्यमान मनुष्यता की भावना की पहचान पर आधारित है चाहे फिर वह दमनकर्ता ही क्यों न हो। इसका आधारभूत विचार है कि सभी मनुष्य अंतिम रूप से परदुःख की अनुभूति करने में और सही तरीके से उसे हटाने में भी सक्षम हैं। गांधी जी कहते हैं : *'मनुष्य जाति में कुछ तो अच्छाई है ही।'* [11] सत्याग्रह केवल दमित एवं दमनकर्ता के बीच ही नहीं बल्कि उन दोनों की मनुष्यता के बीच भी संवाद है। जब दोनों इस आधारभूत विचार को समझ कर कार्य करते हैं तब सत्याग्रह सम्भव हो जाता है।

17. हिन्द स्वराज का न्याय सिद्धांत में भी आधारभूत हस्तक्षेप है। गांधी जी का तर्क है चेतना के प्रतिकूल कानून का विरोध करना न्यायपूर्ण है। अन्याय केवल कानून की संरचना, उद्देश्य एवं भावना में ही नहीं होता बल्कि अन्यायपूर्ण कानून की पालना में भी निहित है। अन्यायपूर्ण कानून की पालना कर हम उसे स्थायी बनाते हैं। गांधी जी कहते हैं कि कोई भी कानून– अन्यायपूर्ण कानून– भी यह नहीं कहता है कि मुझे सहन करो। ऐसा जरूर कहा जा सकता है कि अवज्ञा का दंड मिलेगा। प्रतिरोध का स्थान कानून की संरचना में ही विद्यमान है। जो व्यक्ति चेतनापूर्ण अवज्ञा के कारण दंड स्वीकार करने का इच्छुक है, उसे अन्यायपूर्ण कानून के प्रतिरोध का अधिकार है। गांधी जी ने न्याय को एक व्यक्ति के क्रियाकलाप से जोड़ दिया है। वह तर्क देते हैं कि यह सोचना मूर्खता है कि कोई तीसरा पक्ष न्याय प्रदान कर सकेगा क्योंकि वह किसी पक्ष में शामिल नहीं है। सत्य और न्याय तो दोनों पक्षों द्वारा ही जाना जा सकता है। इस आधार पर उनमें यह क्षमता एवं साहस है कि वे अपना

tadbhav.com home page

मामला निपटा सकें।

18. गांधी जी कहते हैं : *"पहले लोग बैलगाड़ी से रोज बारह कोस की मंजिल तय करते थे। आज रेलगाड़ी से चार सौ कोस की मंजिल मारते हैं।"*[12] चार सौ कोस की गति से चलने का विचार एक विशेष समय में आबद्ध विचार है। तर्क की सार्वभौमिकता एवं भविष्य से संवाद करने की इसकी क्षमता के बावजूद पाठ संदर्भों से भरपूर है– जो अपने समय में आबद्ध है। इटली और भारत, बड़ौदा के महाराजा गायकवाड़ पर बहस, सूरत अधिवेशन, दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति क्रूगर का संदर्भ या जापान के उदय की स्तुति आदि कुछ ऐसे संदर्भ है जो हिन्द स्वराज के पाठ को समकालीन संदर्भ देते हैं।

19. हिन्द स्वराज को दो भाषाओं में पढ़ना चाहिए : गुजराती और अंग्रेजी। यह मूलतः गुजराती में लिखी गयी सम्भवतः एकमात्र पुस्तक है जिसका गांधी जी ने खुद अनुवाद किया। इन दो संदर्भों में महत्वपूर्ण विचलन है। तर्क और अर्थविन्यास की मूलभावना तभी साक्षात हो पाती है जब दोनों मूल पाठ एक साथ पढ़े जा रहे हों।

20. अंत में, हिन्द स्वराज केवल एक व्यक्ति के विचार का ही नहीं व्यवहार का भी पाठ है। यह पाठ व्यवहार से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। व्यवहार में लाये बगैर शायद हिन्द स्वराज की सच्ची महत्ता को जाना नहीं जा सकता।

नोट : हिन्द स्वराज के हिन्दी अनुवाद हिन्द स्वराज, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद पुनर्मुद्रण फरवरी, 2008 से लिए गये हैं।

संदर्भ एवं टिप्पणी

1. ये पुस्तकें हैं *'हिन्द स्वराज'* महात्मा गांधी द्वारा मूल गुजराती से अनुवाद, *दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह* (मूल गुजराती से बलजी गोविन्द जी देसाई द्वारा अनूदित) *सत्य के साथ मेरे प्रयोग* अथवा *आत्मकथा* (मूल गुजराती से श्री महादेव देसाई द्वारा अनूदित) *अनाशक्ति योग* (मूल गुजराती से महादेव देसाई द्वारा अनूदित) *आश्रम नियमावली* (मूल गुजराती से बलजी गोविन्द जी देसाई द्वारा अनूदित) एवं *स्वास्थ्य के लिए* (मूल गुजराती से सुशीला नैय्यर द्वारा अनूदित) इसके अतिरिक्त *रचनात्मक कार्यक्रम : अर्थ एवं प्रयोग* मूलतः अंग्रेजी में लिखा गया एवं बाद में इसका गुजराती में अनुवाद किया गया। हिन्द स्वराज लिखने से पहले गांधी जी ने *गाइड टू लंदन* लिखा था जो कभी प्रकाशित नहीं हो सका।
2. हिन्द स्वराज अध्याय 6, पृ. 17-18
3. वही 14, पृ. 47
4. वही अध्याय 13, पृ. 42-43 शायद इसी कारण गांधी ने डाक्टरों को दुर्गुणों को बढ़ावा देने वाला कहा है। गांधी की यह मान्यता भगवत्गीता के दूसरे अध्याय से प्रेरित है जिसके अनुसार: 'विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष के मन में विषयों के प्रति आसक्ति उत्पन्न होती है। आसक्ति से कामना उत्पन्न होती है। और कामना से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से मूढ़ता उत्पन्न होती है, मूढ़ता से स्मृति नष्ट हो जाती है और स्मृति के नष्ट हो जाने से ज्ञान का नाश होता है और जिस पुरुष के ज्ञान का नाश होता है वह स्वयं ही नष्ट हो जाता है। (उसकी सब प्रकार से अधोगति होती है।)' *अनासक्तियोग,* महात्मा गांधी द्वारा गुजराती में अनूदित श्रीमद्भगवत गीता का हिन्दी रूपांतरण, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृ. 26-27 गांधी के अनुसार डॉक्टर विषयों के प्रति आसक्ति पैदा करने में मदद करते हैं जिससे हम अपने स्व को भूल जाते हैं।
5. हिन्द स्वराज, अध्याय 14, पृ. 47
6. वही
7. इसी कारण अंग्रेजी में प्रयोग करते हुए गांधी दो भिन्न शब्दों *होमरूल* एवं *स्वराज* का प्रयोग करते हैं।
8. हिन्द स्वराज अध्याय 16, पृ. 53-54
9. वही 16, पृ. 54
10. वही 20, पृ. 87
11. वही 11, पृ. 37
12. वही 6, पृ. 18